1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर

MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के
999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध
रु. ~~2200~~ 1100/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
9650183336, 9540040339

वर्ष 47, अंक 18 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 मार्च, 2024 से रविवार 24 मार्च, 2024
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

मधुर प्रेरणा लेकर आया
होली का त्यौहार
आओ, आर्यों मिलकर मनाएं
हम सब सपरिवार

200 वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

कार्यक्रम

रविवार, 24 मार्च, 2024
सायं : 3:15 से 7:15 बजे तक

स्थान :
रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल
राजाबाजार, कनॉट प्लेस, स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे,
शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-110001

नवसस्येष्टि यज्ञ : 3-15 बजे | विशिष्ट संगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम | फूलों की होली

सम्मान :
- ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान • सबसे छोटे बच्चे का सम्मान
- सबसे अधिक आयु के महिला एवं पुरुष का सम्मान • सबसे नव विवाहित दंपत्ति का सम्मान
- एक ही वंशावली के सबसे अधिक संख्या में पधारने वाले परिवार का सम्मान

समारोह स्थल पर उपलब्ध सेवाएं

200 वीं जयंती के साहित्य एवं सामान पर विशेष छूट
सभा द्वारा संचालित सेवा योजनाओं का परिचय

समारोह का सीधा प्रसारण आर्य संदेश टी. वी. चैनल पर किया जायेगा

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विद्यामित्र ठुकराल	विनय आर्य
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामन्त्री
9810061763	9810072175	9958174441

उप प्रधान : सर्वश्री ओम प्रकाश आर्य, शिव कुमार मदान, अरूण प्रकाश वर्मा, श्री मती मृदुला चौहान एवं श्री अशोक कुमार गुप्ता
मन्त्री : सर्वश्री सुखबीर सिंह आर्य, शिवशंकर गुप्ता, सुरेन्द्र आर्य, सुरेश चन्द्र गुप्ता, वीरेन्द्र सरदाना, कृपाल सिंह एवं श्री नीरज आर्य

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में ऋषि बोध दिवस सम्पन्न

देश और समाज को कमजोर करने वाली षड्यंत्रकारी शक्तियों से रहें जागरूक

यज्ञ, भजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, टंकारा स्मरणोत्सव की प्रेरक वीडियो, सम्मान और उदबोधन रहे विशेष आकर्षण

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रंखला में आयोजित प्रत्येक कार्यक्रम अपने आपमें ऐतिहासिक और प्रेरणाप्रद सिद्ध हो रहा है। जिसमें महर्षि की 200वीं जयन्ती के जन्मभूमि टंकारा में भव्य सफलता के बाद आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वाध ान में 8 मार्च 2024 को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश– 1 नई दिल्ली में बोध दिवस अत्यंत उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आचार्या विमलेश बंसल जी, दर्शनाचार्य, सहयोगी श्रीमती विद्योत्तमा जी के ब्रह्मतत्व में यज्ञमान श्रीमती उमा शशि दुर्गा जी, श्रीमती तृप्ता शर्मा जी, श्रीमती उर्मिला मनचन्दा जी, श्रीमती कृतिका तिवारी जी, श्रीमती आशा चौहान जी, श्रीमती अनिता चौहान जी एवं श्रीमती राजेश्वरी जी द्वारा यज्ञ संपन्न हुआ। बड़ी ही श्रद्धा व भक्ति भाव से आप सब ने प्रभु का गुणगान करते हुए महर्षि दयानन्द को स्मरण व साधुवाद करते हुए भाव व्यक्त किए कि हम उन्हीं के दिखाए पथ पर चलते हुए, उन्हीं के द्वारा दी हुई आज्ञानुसार जीवनयापन करें।

श्री तरंग लक्ष्मीकांत जी, वैदिक भजनोपदेशक ने अपने सहयोगी श्री प्रमोद गोयल जी तथा श्री अमूल पाल सिहं के साथ बहुत ही मधुर व संगीतमय वातावरण में भजन सुनाए। सुशील राज आर्य विद्या ज्ञान मन्दिर, आर्यसमाज कलकाजी गोविन्दपुरी की छात्राओं ने वैदिक मन्त्र पाठ तथा अर्थों का वाचन किया, आर्य शिशु शाला, आर्य समाज ग्रेटर कैलाश–1 ने वेदों के राही प्रस्तुति दी तथा आर्य समाज सी 3, पंखा रोड, जनक पुरी की वीरांगनाओं ने बधाई गीत द्वारा यह दर्शाया कि यदि

– शेष पृष्ठ 4 पर

देववाणी-संस्कृत

आहुति स्वीकार करो

वेद-स्वाध्याय

स त्वं नो अग्नेऽ वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळकं सुहवो न एधि।।-यजुः० 21/4
ऋषिः **वामदेवः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **अग्ने** = हे अग्ने! **सः** = वह प्रसिद्ध **त्वम्** = तुम **नः** = हमारे लिए **ऊती** = अपने रक्षण के साथ **अवमः** = नीचे उतरे हुए, नजदीकी **भव** = हो जाओ, **अस्याः** = इस **उषसः व्युष्टौ** = उषा के उदयकाल में, नवप्रकाश-प्राप्ति के समय में **नेदिष्ठः** = हमारे अत्यन्त निकट हो जाओ। **रराणः** = प्रसन्न, रममाण होते हुए **नः** = हमारे **वरुणम्** = वरुण-पाश को, पाश-बन्धन को **अवयक्ष्व** = यजन द्वारा काट दो, नष्ट कर दो। **मृळकम्** = [हमारी इस] सुखदायक हवि को **वीहि** = स्वीकार करो, **नः** = हमारे लिए **सुहवः** = सुगमता से, बुलाने योग्य **एधि** = हो जाओ।

विनय - हे अग्ने! हम तुम्हें पुकार रहे हैं। आज हम तुम्हें अपने पाप-बन्धन से छुटकारा पाने के लिए पुकार रहे हैं। तुम अपनी रक्षा के लिए 'अवम' हो जाओ, नीचे उतर आओ-हमें अपनी निकटता का अनुभव कराओ। हम पतितों की रक्षा के लिए तुम्हारा अवम होना आवश्यक है। यह देखो, उषा का उदय हो रहा है, एक नये दिन का प्रारम्भ हो रहा है, हमारे लिए एक नवीन प्रकाश के पाने का समय आ रहा है। इस शुभ प्रभात में तो, हे अग्ने! तुम हमारे निकटतम हो जाओ, आकर हमें अपनाओ। हम तुम्हें न जाने कब से रिझाने का यत्न कर रहे हैं। त्याग, तप, संयम, नियम आदि तुम्हारे प्रेम के पाने का कोई साधन हमने बाकी नहीं छोड़ा है। आज तो हम अपने पवित्र आत्मबलिदान की भेंट हाथ में लेकर तुम्हें पुकार रहे हैं। क्या हमारे इस सुन्दर महान् बलिदान से भी तुम प्रसन्न न होओगे? हमारी इस सुखदायी आत्माहुति को तो, हे अग्ने! तुम अवश्य स्वीकार करो। अब तो प्रसन्न होओ और रममाण होते हुए आज तो हमारे इस पापबन्धन को काट गिराओ और इस प्रकार हमारे इस यजन को सफल कर दो। पुकारते-पुकारते बहुत समयहो गया है। अब तो, हे अग्ने! तुम हमारे लिए सुगमता से बुलाने योग्य हो जाओ, हमारी पुकार पर आ-जानेवाले हो जाओ। आओ, हे अग्ने! आओ, यह आहुति स्वीकार कर हमारा बन्धन छुड़ाओ।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द 200वीं जयन्ती

200वें जन्मोत्सव-स्मरणोत्सव की ऐतिहासिक सफलता के लिए आर्य समाज के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई

महर्षि की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के 2 वर्षीय आयोजन 2025 तक निरंतर चलेंगे, इनके साथ ही प्रत्येक आर्य को अपने अपने स्तर पर 200 व्यक्तियों तक संपर्क करने का अपना लक्ष्य पूरा करना चाहिए। अतः हम सब आर्यजनों का परम कर्तव्य है कि हम सब मिलकर एक तरफ टंकारा में महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती के सफल आयोजन की खुशी मनाएं और दूसरी तरफ आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लें और उसे निष्ठापूर्वक निभाएं।

आर्य समाज द्वारा मनाए जाने वाले पर्वों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव सदैव प्रमुख पर्व रहा है। इससे भी आगे जब महर्षि की 200 वीं जयन्ती का अवसर हो, और वह भी उनकी जन्मभूमि टंकारा में हो, तब तो संपूर्ण आर्य जगत में अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास का होना स्वाभाविक ही है। जिसका दिग्दर्शन हमने 10 से 12 फरवरी 2024 को टंकारा में किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों का शुभारंभ 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में अपने अभूतपूर्व ऐतिहासिक सपफलता के साथ हुआ था। किंतु महर्षि की 200वीं जयन्ती का टंकारा में इतना बड़ा और सुनियोजित आयोजन जिसमें स्वयं माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु जी ने टंकारा पहुंचकर कृतज्ञता ज्ञापित की, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने वर्चुवल उदबोधन में महर्षि को नमन किया, गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी तीनों दिन कार्यक्रम में उपस्थित रहे, गुजरात के मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री, आर्य समाज का समस्त नेतृत्व, संन्यासी वृंद, वैदिक विद्वान और देश विदेश के हजारों कार्यकर्ता, अधिकारी और सदस्य उपस्थित रहे, टंकारा गुजरात के क्षेत्रीय जनता भारी संख्या में आई, तीनों दिन मेला लगा रहा, कार्यक्रम स्थल पूरी तरह से खचाखच भरा रहा, सबके लिए भोजन और आवास की सुंदर व्यवस्था की गई। पूरे कार्यक्रम स्थल को विधिवत सजाया गया था। इसके लिए हजारों कार्यकर्ता अनुभवी अधिकारियों के निर्देशन में दिन रात लगे रहे। संपूर्ण कार्यक्रम अनुशासित, व्यवस्थित और ऐतिहासिक रूप से अत्यंत सफल सिद्ध रहा। जो कि आर्य जगत के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसके लिए आर्य समाज के सभी कार्यकर्ताओं, अधिकारियों और सदस्यों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए हमें अद्भुत गर्व की अनुभूति हो रही है।

यह सर्व विदित है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जन्मभूमि टंकारा में इतना भव्य, विराट और विशाल आयोजन करना, जिसमें विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की माननीय राष्ट्रपति जी पधार रही हों, उनका आर्य समाज की ओर से भव्य स्वागत करना, और आर्य समाज के संदेश को जन-जन तक पहुंचाना, समस्त आर्य जनों को आमंत्रित करना, उनके उत्साह को नियंत्रित रखना, आर्य समाज की मान्यताओं, परंपराओं और सिद्धांतों की संक्षिप्त झलकियां प्रस्तुत करना, सुरक्षा की दृष्टि से भी सावधानी रखना, सबके लिए जलपान और भोजन सहित आवास और साज सज्जा आदि अपने आप में एक बड़ी चुनौती थी। लेकिन इससे भी बड़ी बात थी कि टंकारा एक छोटा सा गांव है और वहां पर हजारों की संख्या में अतिथियों के आवास की व्यवस्था, भोजन का समुचित प्रबंध और अन्य अनेक आवश्यकताओं को पूरा करना अपने आपमें बड़ी कठिन परीक्षा थी किंतु जहां चाह-वहां राह की लोकोक्ति को चरितार्थ करते हुए आर्य समाज के कुशल नेतृत्वकर्ता अधिकारी, कार्यकर्ताओं ने अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए अथक परिश्रम और पुरुषार्थ करके कार्यक्रम को ऐतिहासिक रूप से सफल बनाया। इस अवसर पर शोभायात्रा, चतुर्वेद परायण यज्ञ, महासम्मेलन और समस्त कार्यक्रम अपने आपमें अत्यंत प्रेरणाप्रद और सफल सिद्ध हुए। यह अपने आप में एक अत्यंत आनंद पूर्ण सुखद अनुभूति है।

10 से 12 फरवरी तक तीनों दिन कार्यक्रम परिसर पूरी तरह से खचाखच भरा रहा। सभी कार्यक्रमों में आर्यजन भारी संख्या में उपस्थित थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सेवा कार्यों और उनके जीवन से जुड़े संस्मरणों, उनके शिष्यों अनुयाइयों और उनके विषय में महापुरुषों के विचारों की प्रदर्शनी को देखकर माननीय राष्ट्रपति जी ने संतोष जताते हुए प्रशंसा व्यक्त की, यह आर्य समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादाई है। इस प्रदर्शनी हाल में टंकारा में बनने वाले ज्ञान ज्योति तीर्थ स्मारक माडल को भी राष्ट्रपति जी सहित सभी नेताओं, अध्किारियो, और आर्यजनों ने देखा और प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर इसका राष्ट्रपति जी द्वारा शिलान्यास भी किया गया, जिसे प्रत्यक्ष या लाइव देखकर संपूर्ण आर्य जगत झूम उठा। आर्य समाज के यज्ञ में माननीय राष्ट्रपति जी द्वारा श्रद्धा पूर्वक आहुति देना भी अपने आपने गौरव की बात है। शोभायत्राा का भव्य आयोजन, आर्य वीर-वीरांगनाओं द्वारा व्यायाम प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम और अनेक अन्य आयोजन अपने आपमें अनुपम और अदभुत प्रेरक सिद्ध हुए। इससे भी बड़ी बात राष्ट्रपति जी का सारगर्भित प्रेरक उद्बोधन, जिसमें उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के सेवा कार्यों को सरल सहज शब्दों में प्रस्तुत किया और आर्य समाज के सेवा कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस अवसर पर हम आर्यजनों को महर्षि के सिद्धांतों, उनकी शिक्षाओं, आर्य समाज की मान्यताओं और परंपराओं का लगातार प्रचार-प्रसार और विस्तार करने का संकल्प लेना चाहिए, यह हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है। महर्षि की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के 2 वर्षीय आयोजन 2025 तक निरंतर चलेंगे, इनके साथ ही प्रत्येक आर्य को अपने अपने स्तर पर 200 व्यक्तियों तक संपर्क करने का अपना लक्ष्य पूरा करना चाहिए। अतः हम सब आर्यजनों का परम कर्तव्य है कि हम सब मिलकर एक तरफ टंकारा में महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती के सफल आयोजन की खुशी मनाएं और दूसरी तरफ आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लें और उसे पूरी निष्ठा से निभाएं। सभी को हार्दिक बधाईयां और अनन्त शुभकामनाएं। - ***सम्पादक***

भारत सरकार द्वारा अभी हाल ही में लागू किए गए संविधान संशोधन का मामला

नागरिकता संशोधन कानून का विरोध क्यों?

बंटवारे की लकीर खिंची और पक्के मकानों में रहने वाले हिन्दू, सिख, जैन रातों-रात बेघर हो गये और पीछे रह गये बर्बादी ये निशान, जिसकी गवाही आज भी बड़ी संख्या में जर्जर हो चुके ये मकान, मंदिर, और गुरुद्वारे दे रहे हैं। बंटवारे के समय हुए दंगों में सरवन सिंह ने अपने परिवार के 22 सदस्यों को खो दिया था। मोहन सिंह उस समय सिर्फ छह साल के थे, लेकिन हालात ने उन्हें मोहन सिंह से अब्दुल खालिक बना दिया।

कोई दूसरा मोहन अब्दुल खालिक ना बने इसके लिए सीएए यानी नागरिकता संशोधन कानून भारत में लागू हो गया है। यह कानून पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में धार्मिक रूप से प्रताड़ित हो रहे अल्पसंख्यक समुदायों को नागरिकता देने के विषय में है। यह कानून अस्तित्व में इसीलिए आया क्योंकि आंकड़े लगातार यह बताते रहे हैं कि कैसे पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में गैर- मुस्लिमों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार होता आ रहा है।

पिछले बरस एक ख़बर दिखी, अफगानिस्तान में रह रहे एक आखिरी यहूदी की। मज़हबी कट्टरता की वजह से रफ़्ता-रफ़्ता अफगानिस्तान में रहने वाले यहूदी मुल्क छोड़ के चले गए सिवाए एक के। कहाँ चले गये जाहिर सी बात है अपने वतन इसराइल चले गये होंगे या किसी अन्य गैर इस्लामिक मुल्क में। इसके बाद खबर आई कि काबुल के गुरु हर राई साहिब गुरुद्वारे पर हुए आतंकी हमले में 25 सिख मारे गये। अफगानिस्तान में मारे गये सिखों के परिवारों को और जो सिख वहां जिन्दा बचे थे उन्हें आशा की एक किरण नजर आई और वह भी भारत का नागरिकता संशोधन कानून जिसके विरोध में कौमी एकता के ढोल पीटने वालों ने कई महीने तक शाहीन बाग में जमकर देशविरोधी उत्पात मचाया था।

इस नागरिकता संशोधन कानून के सहारे अफगानिस्तान से 128 हिन्दू व सिख परिवार भारत पहुंचे, खबर आई कि मजहबी शैतानों की सनक के शिकार बने 700 सिखों को भारत वापस लाया जाएगा। अब सवाल है कि आखिर इन लोगों को अपना वतन क्यों छोड़ना पड़ रहा है जिस मुल्क में पैदा हुए, जिसकी माटी को खून पसीने से सींचा और आज वहां से अपना घर-बार छोड़कर क्यों भागना पड़ रहा है? कारण साफ है 'काफिर' का हर जगह यही हाल होता है।

अफगानिस्तान में अल्पसंख्यकों हिन्दू और सिखों को स्कूलों में प्रवेश नहीं दिया जाता। दोनों ही समुदायों के लोगों को सार्वजनिक रूप से काफिर कहा जाना, उन पर थूका जाना, और उनकी शव-यात्राओं पर पत्थर फेंके जाना आम बात है। इन दोनों समुदायों की महिलाओं को बाहर निकलने के लिए बुर्के का इस्तेमाल करना पड़ता है। दुकानदारों को स्थानीय एजेंसियों को व्यापार करने की एवज में 'जजिया' चुकाना पड़ता है। सरकारी नौकरियों में इन्हें कोई जगह नहीं दी जाती है। यह सब जानने के बावजूद भी भारत का विपक्ष नागरिकता संशोधन कानून का लगतार विरोध करता रहा है।

अफगानिस्तान ही क्यों पाकिस्तान का सियालकोट जिला है यहाँ कभी हिन्दू रहा करते थे, ये उनकी मातृभूमि थी, जन्म स्थली कहो या कर्मस्थली भूमि थी। ये आज वीरान घर उन दरवाजों पर लिखा ओम भी दिखाई पड़ रहा है। बेहतरीन नक्कासी दो मंजिला बने ये मकान सन 1947 से पहले के बने है यानि तब के जब लोगों के पास कच्चे मकान तो क्या घास-फूस के छप्पर हुए करते थे, लेकिन बंटवारे की लकीर खिंची और पक्के मकानों में रहने वाले हिन्दू, सिख, जैन रातों-रात बेघर हो गये और पीछे रह गये बर्बादी ये निशान, जिसकी गवाही आज भी बड़ी संख्या में जर्जर हो चुके ये मकान, मंदिर, और गुरुद्वारे दे रहे हैं। बंटवारे के समय हुए दंगों में सरवन सिंह ने अपने परिवार के 22 सदस्यों को खो दिया था। मोहन सिंह उस समय सिर्फ छह साल के थे, लेकिन हालात ने उन्हें मोहन सिंह से अब्दुल खालिक बना दिया।

कोई दूसरा मोहन अब्दुल खालिक ना बने इसके लिए सीएए यानी नागरिकता संशोधन कानून भारत में लागू हो गया है। यह कानून पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में धार्मिक रूप से प्रताड़ित हो रहे अल्पसंख्यक समुदायों को नागरिकता देने के विषय में है। यह कानून अस्तित्व में इसीलिए आया क्योंकि आंकड़े लगातार यह बताते रहे हैं कि कैसे पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में गैर-मुस्लिमों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार होता आ रहा है। कैसे संविधान के लागू होने के बाद से ही पाकिस्तान में गैर मुस्लिमों के साथ संस्थागत भेदभाव आरम्भ हो गया था। और ऐसा नहीं है कि पश्चिम को इस बात की भनक नहीं है।

अमेरिका द्वारा धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन वाली जो सूची हर वर्ष जारी की जाती है उसमें पाकिस्तान का नाम ऐसे देश में शामिल है जहां पर धार्मिक स्वतंत्रता नहीं है। पाकिस्तान को कंट्रीज ऑफ पर्टिकुलर कंसर्न की सूची में डाला गया है, जिसका अर्थ यह हुआ कि यहाँ पर धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन से जुड़े अत्यंत गंभीर मामले दर्ज किए गए हैं। हिन्दू अमेरिका फाउंडेशन भी समय-समय पर कई आंकड़े पाकिस्तानी हिन्दुओं की दुर्दशा पर जारी करता रहता है और सबसे बड़े सबूत वे पाकिस्तानी हिन्दू हैं, जो अपनी धार्मिक पहचान की रक्षा के लिए भारत में शरण लेने आए हैं। भारत उनका अपना ही घर है। उनके अपने घर में उन्हें शरण नहीं मिलेगी तो कहां मिलेगी? यह एक ऐसा प्रश्न है जो विदेशी मीडिया के उस वर्ग से पूछा जाना चाहिए जो सीएए के लागू होते ही इसे मुस्लिम विरोधी बताकर वही खेल खेलने का कुप्रयास कर रहा है, जो आज से कुछ वर्ष पहले खेल चुका है। पाकिस्तान के 'सेंटर फॉर पीस एंड जस्टिस' की एक रिपोर्ट और नेशनल डेटाबेस एंड रजिस्ट्रेशन अथॉरिटी से एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार रिपोर्ट में कहा गया है कि अल्पसंख्यक पाकिस्तान की कुल आबादी का पांच प्रतिशत से भी कम हैं, जिसमें हिन्दू सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है।

पाकिस्तान में हिन्दू आबादी सहित सभी अल्पसंख्यक गरीब हैं और देश की विधायी प्रणाली में उनका प्रतिनिधित्व नगण्य है। अधिकांश हिन्दू आबादी सिंध प्रांत में बसी है जहां वे मुस्लिम निवासियों के साथ संस्कृति, परंपरा और भाषा साझा करते हैं। वे अक्सर चरमपंथियों द्वारा उत्पीड़न की शिकायत करते हैं।

आयोग ने अपनी रिपोर्ट दिवंगत कार्यकर्ता असमा जहांगीर को समर्पित करते हुए कहा था कि आतंकवाद से सम्बन्धित मौतें भले ही कम हुई हों लेकिन धार्मिक अल्पसंख्यक हिंसा का दंश झेल रहे हैं। उनका अपहरण हो रहा है, लेकिन ईश-निन्दा कानून ने लोगों को चुप रहने पर मजबूर कर दिया है। अल्पसंख्यक समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों को असहिष्णुता और चरमपंथ ने सीमित कर दिया है। वहां की सरकार अल्पसंख्यकों पर जुल्म के मुद्दे से निपटने में अप्रभावी रही और अपने कर्तव्यों को पूरा करने में नाकाम रही।

दरअसल, आज पाकिस्तान में हिन्दुओं की आबादी करीब 70 लाख है और यह पाकिस्तान का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है। इस समुदाय की सबसे बड़ी चिन्ता जबरन धर्मांतरण है, अधिकतर युवतियों का जबरन धर्मांतरण होता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अधिकतर नाबालिग लड़कियों को अगवा कर लिया जाता उनको जबरन इस्लाम में धर्मांरित किया जाता है और फिर मुस्लिम व्यक्ति से शादी कर दी जाती है।

इसी तरह कभी पाकिस्तान से लेकर अफगानिस्तान तक में बौद्ध धर्म का प्राचीन इतिहास था। पंजाब में तक्षशिला और खैबर पख्तूनख्वा में तख्त बाग के क्षेत्र में मौजूद स्तूप और स्वात घाटी में जन्म लेने वाली गंधारा संस्कृति जिसे बौद्ध धर्म का पालना माना जाता है, लेकिन अब स्थिति यह है कि पाकिस्तान में बौद्धों का कोई नियमित मंदिर मौजूद नहीं। बौद्धों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व तो शून्य है ही साथ में वह पाकिस्तानी होने के बावजूद पहचान से वंचित हैं, जैसे को भूली-बिसरी कौम हो। धीरे-धीरे हो सकता है कि एक दो पीढ़ी बाद उनका वजूद जड़ से ही खत्म हो जाए। पाकिस्तानी पंजाब में सिखों के कई पवित्र स्थान रहे हैं, लेकिन आज वे भी अपना वजूद बचाने के लिए संघर्षरत हैं।

यही नहीं पाकिस्तान में ईसाई लोगों को भी खतरा बराबर बना रहता है। ईश निन्दा कानून का डर तलवार की तरह हर समय उनके समुदाय के सिर पर लटकता रहता है। अखलाक और पहलू खान की हत्या पर भारत को कोसने वाली पाकिस्तानी मीडिया में जहां ये सवाल उठाए जाने थे, वहां मीडिया पाकिस्तान के हिंसक चेहरे को उदारवाद के रंग से लीप-पोतकर यह खबर चला रही है कि पेशावर की रहने वालीं 24 साल की मनमीत कौर पाकिस्तान की पहली सिख महिला पत्रकार बनी। शायद 70 वर्ष के पाकिस्तान की जेब में अल्पसंख्यक समुदाय को खुश करने के लिहाज से सिर्फ एक यही पहली उपलब्धि है जिसे बार-बार टीवी पर चलाकर चलाकर पाकिस्तान के चेहरे पर लगे चरणजीत सिंह की हत्या और हजारों हिन्दू बच्चियों के रेप व धर्मांतरण के दाग धोने की कोशिश की जा रही थी।

जबकि सच्चा यह है कि पाकिस्तान में मजहब के नाम पर पंथ आधारित हिंसा जारी है और सरकार हमलों और भेदभावों से अल्पसंख्यकों की हिफाजत करने में विफल है। चरमपंथी पाकिस्तान के लिए विशिष्ट इस्लामिक पहचान बनाने पर अमादा हैं और ऐसा लगता है कि उन्हें पूरी छूट दी गई है। आजादी के समय पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की आबादी 20 फीसदी से ज्यादा थी। 1998 की जनगणना के मुताबिक यह संख्या घटकर अब 3 फीसदी के करीब है। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर 17 फीसदी अल्पसंख्यक समुदाय कहाँ गया?

गृह मंत्रालय के डेटा के अनुसार, साल 2011 से 2014 के बीच 14,726 पाकिस्तानी हिन्दुओं को एलटीवी यानि लम्बी अवधि वीजा दिया गया था। इसके

– शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

देश और समाज को कमजोर करने वाली षड्यंत्रकारी शक्तियों से रहें जागरूक

मातृशक्ति द्वारा यज्ञ। दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारम्भ एवं सम्मान - कवि श्री धर्मेश अविचल, पुस्तक मेला समिति के कार्यकर्ताओं, टंकारा में आयोजित 200वें जन्मोत्सव के कार्यकर्ताओं, विभिन्न अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम देने वाले बच्चों का सम्मान करते दिल्ली सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारीगण।

महर्षि दयानंद जी को बोध न हुआ होता तो नारी जाति का उद्धार न होता, पूरे विश्व की नारियों का सम्मान न होता।

श्री धर्मेश अविचल जी ने कविता पाठ किया। माता छज्जिया देवी आर्य विद्वान पुरस्कार से श्रीमती तृप्ता शर्मा जी एवं श्रीमती कृतिका तिवारी जी को तथा डॉ. सत्यकाम जी द्वारा माता रुक्मणि देवी स्मृति पुरस्कार से श्रीमती आशा चौहान जी, श्रीमती पूजा जी एवं सुश्री राजेश्वरी जी को सम्मानित किया गया। पुस्तक मेले के संयोजकों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। एक भव्य स्मृति टंकारा आयोजन - वीडियो का लोकार्पण किया गया। टंकारा आयोजन में विभिन्न संयोजकों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

श्री राजू आर्य के नेतृत्व में यज्ञ उत्थान मानव कल्याण समिति के बच्चों द्वारा बहुत ही सुंदर नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी गई। श्री उदयन शर्मा जी द्वारा पं. ब्रह्मानन्द शर्मा आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार, टंकारा आयोजन में यज्ञ उत्थान मानव कल्याण समिति के बच्चों को प्रमाण पत्र, तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आज की वर्तमान परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए अपने

- जारी पृष्ठ 7 पर

बोधोत्सव के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रेरक सन्देश प्रस्तुत करते बच्चे एवं उपस्थित आर्यजनों से भरा हॉल

सिक्किम

आर्य समाज के भवन निर्माण कार्य शुभारम्भ एवं राज्यपाल से शिष्टाचार भेंट

महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर वाटिका आर्य समाज सम्पूर्ण विश्व में निरंतर विस्तृत हो रही है। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के इस क्रम में जहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों के अंतर्गत वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार प्रसार लगातार हो रहा है, वहीं आर्य समाज के नये केन्द्र स्थापित किए जा रहे हैं। अभी पिछले दिनों सिक्किम में आर्य समाज के प्रथम और प्रमुख केन्द्र के भवन का निर्माण का कार्य यज्ञ के साथ आरंभ हुआ। इस अवसर पर श्रीमती सुषमा शर्मा जी मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहीं और उन्होंने यज्ञ में आहुति देकर इस भवन निर्माण की निर्विघ्न सफलता के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। इस अवसर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, गंगटोक आर्य समाज से श्री जगदीश प्रधान जी, श्रीमति पूर्णिमा प्रधान जी, सिलीगुड़ी आर्य समाज के स्तंभ श्री आलोक शर्मा जी, श्री अतुल शर्मा जी, यज्ञ ब्रह्मा श्री ओम वशिष्ठ जी, श्री शेखर गौतम जी, श्री मंदीप शर्मा जी, श्री पद्म जी, श्री एकनाथ जी, गोपाल जी आदि अन्य महानुभाव उपस्थित रहे।

ज्ञात हो कि सिक्किम में यह भूमि आर्य समाज द्वारा सरकार से प्राप्त की गई है। जिस पर एक भव्य भवन का निर्माण

- जारी पृष्ठ 7 पर

जालन्धर - पंजाब

आर्यसमाज शहीद भगत सिंह नगर, जालन्धर (पंजाब) में ज्ञान ज्योति पर्व सम्पन्न

समाज कल्याण हेतु अंधविश्वास और वर्तमान की चुनौतियों का समाधान अत्यन्त आवश्यक - विनय आर्य

वैदिक सिद्धान्तों को अपनाने से होगी मानव समाज एवं मानवता की उन्नति - सुदर्शन शर्मा

महर्षि दयानन्द सरस्वती के दूसरे जन्म शताब्दी वर्ष में आर्यसमाज शहीद भगत सिंह नगर का 30वां वार्षिक महोत्सव ज्ञान ज्योति पर्व के रूप में संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सुधीर शर्मा के कर कमलों से सैकड़ों आर्यो के साथ ध्वजारोहण किया गया। यज्ञ ब्रह्मा श्री विष्णुमित्र वेधार्थी के निर्देशन में गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा वेद पाठ एवं 51 कुण्डीय भव्य यज्ञ किया गया। जिसमे 108 यजमान परिवारों और सैकडों यज्ञ प्रेमीयो ने आहुतियां दी। यज्ञोपरान्त श्री ध्रुव मित्तल की अध्यक्षता में 'ज्ञान ज्योति सम्मेलन' आरम्भ हुआ, इस सम्मेलन में वैदिक विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने सम्बोधित किया। मुख्य आतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि संसार के उपकार के लिये समाज से अन्धविश्वास निर्मूलन करना, अपने से छोटों को गले लगाना, परिवारों की सिकुड़न दूर कर परिवारों की वृद्धि करना, पारिवारिक सम्बन्धों को बचाना, मद्यपान व मांसाहार के पाप से सबको बचाना आवश्यक है। 'आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान सुदर्शन शर्मा ने कहा कि

आर्यसम्मेलन एवं ज्ञान ज्योति पर्व पर पंजाब सभा के अधिकारियों एवं मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी का स्वागत एवं सम्मान

- जारी पृष्ठ 7 पर

राजस्थान विश्वविद्यालय

महर्षि दयानन्द के स्वराष्ट्र, स्व संस्कृति, स्वधर्म एवं स्वभाषा सम्बन्धी विचारों से ही सम्भव है विकसित भारत की संकल्पना - कलराज मिश्र, राज्यपाल

राष्ट्र-अभ्युदय एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक महर्षि दयानन्द सरस्वती' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती के क्रम में मानविकी पीठ, संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में 15-16 मार्च, 2024 को ''राष्ट्र-अभ्युदय एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक महर्षि दयानन्द सरस्वती'' विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन 15 मार्च को श्री कलराज मिश्र, माननीय राज्यपाल, राजस्थान द्वारा किया गया। संगोष्ठी में लगभग 500 प्रतिभागियों ने सहभागिता निभाई एवं 11 सत्रों में 150 शोध पत्र पढ़े गए। जिनमें भारत के विभिन्न भागों से पधारे विद्वानों के द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के वेद विषयक चिन्तन, राष्ट्रधर्म, स्वधर्म, भारतीय संस्कृति, स्वराज्य, समन्वयात्मक दार्शनिक दृष्टि आदि भिन्न-भिन्न विषयों पर अपने

- जारी पृष्ठ 7 पर

कोटा-राजस्थान

200वीं जयन्ती पर शोभायात्रा एवं यज्ञ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों के अंतर्गत कोटा राजस्थान में लगातार यज्ञ, योग, सेवा और समर्पण के विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मानव समाज को जाग्रति प्रदान करने वाले आयोजन संपन्न हो रहे हैं। इसके लिए आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा जी सहित वहां के सभी माननीय अधिकारी, कार्यकर्ताओं और सदस्यों सहित पूरी टीम को बधाई। इस क्रम में आर्य समाज छबड़ा के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 11 कुंडीय यज्ञ का सुंदर आयोजन किया गया और विशाल शोभायात्रा में कोटा रावतभाटा के आर्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

- जारी पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

गंगा तट पर सिंहनाद

(सन् 1867 से 1869 के सितम्बर मास तक)

गतांक से आगे -

त्यागी महर्षि दयानन्द हिन्दू-जाति में फैली हुई कुरीतियों का नाश करने के लिए कटिबद्ध होकर गंगा-तट पर भ्रमण करने लगे। सुधार की पहली दशा में जो दृष्टि सम्प्रदाय की रेखाओं से परिमित थी, वह इस दूसरी दशा में सम्पूर्ण आर्य (हिन्दू) जाति तक विस्तृत हो गई। इस समय महर्षि दयानन्द के प्रोग्राम में सम्पूर्ण आर्यजाति के रोगों को नष्ट करना और धर्म के स्वरूप को प्रकाशित करना था। महर्षि जहां कहीं जाते थे, निम्नलिखित आठ गप्पों का खण्डन करते थे। यह ध्यान में रखना चाहिए कि इस समय महर्षि जी प्राय: संस्कृत में ही व्याख्यान देते थे। गप्पें ये हैं- (1) अठारह पुराण; (2) मूर्ति-पूजा; (3) शैव, शाक्त, रामानुज आदि सम्प्रदाय; (4) तन्त्र-ग्रन्थ, वाम मार्ग आदि; (5) भंग, शराब आदि सब नशे की चीजें; (6) पर-स्त्री गमन; (7) चोरी; (8) छल, अभिमान, झूठ आदि। वह इन आठ गप्पों का खण्डन करते थे और यह उपदेश देते थे कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य की एक ही गायत्री है। इन तीनों ही वर्णों को गायत्री के पाठ का समान अधिकार है और उनमें से कोई भी वर्ण ऐसा नहीं जो यज्ञोपवीत का अधिकारी न हो।

इस समय के कार्यक्रम पर ध्यान देने से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं- (1) इस समय महर्षि जी का कार्यक्रम खण्डनात्मक था। आर्यजाति की दुर्दशा देखकर महर्षि जी का हृदय रो रहा था। उनका परोपकारी हृदय अपने सजातीयों की दशा देखकर शान्त नहीं रह सकता था। दु:ख का मूल बुराइयों में था, इस कारण आपने बुराइयों को तर्क और ज्ञान के दावानल से जलाकर राख कर देने का निश्चय किया। आपके जीवन का वह खण्डन-युग कहा जा सकता है।

(2) ऊपर दिये हुए कार्यक्रम को देखने से यह भी स्पष्ट होगा कि स्वामी जी की दृष्टि जहां सम्प्रदायों की सीमा से बाहर जा चुकी थी, वहां आर्यजाति की सीमाओं का उल्लंघन नहीं कर सकी थी। इसका कारण यह नहीं था कि संसार मात्र के लिए उनके हृदय में स्नेह का भाव नहीं था या वह केवल आर्यजाति को ही धर्म की अधिकारिणी समझते थे। इसका मुख्य कारण यह था कि किसी भी सुधारक को लीजिए, वह सार्वभौम सिद्धान्तों का प्रचारक होता हुआ भी अपने वातावरण के अन्दर ही रह सकता है। ईसा को एक सार्वभौम सुधारक कहा जा सकता है; परन्तु बाइबिल में भी यहूदियों के पादरियों के ही दुर्व्यवहारों का खण्डन है, भारतवर्ष के ब्राह्मणों या बौद्धों में प्रचलित रीतियों का खण्डन नहीं। चाहे मनुष्य कितना ही बड़ा हो, वह सार्वभौम सिद्धान्तों का प्रचार अपने दृष्टि-क्षेत्र में आए हुए विषय की अपेक्षा से ही कर सकता है। उसकी बुद्धि वहीं तक फैल सकती है, जहां तक मनुष्य की बुद्धि का फैलना सम्भव है। इस समय तक महर्षि जी के दृष्टि क्षेत्र में आर्यजाति

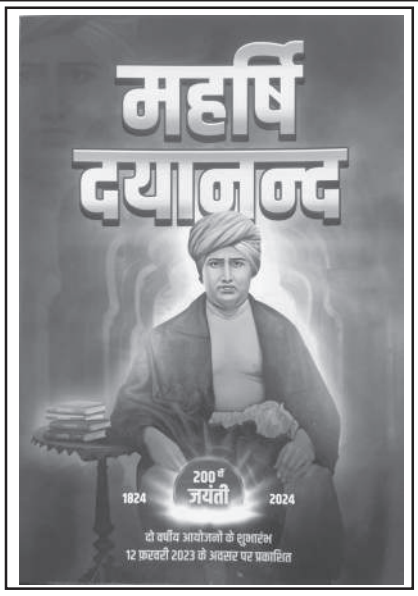

की आन्तरिक दशा ही आई थी। सार्वभौम सिद्धान्तों का प्रयोग करके महर्षि जी ने उस बिगड़ी हुई दशा के कारणों पर विचार किया, उसका अनुसंधान किया। जो उपाय उन्हें उचित प्रतीत हुआ, उसके प्रयोग का यत्न किया। वह इस समय प्रधानतया खण्डनात्मक था। - *क्रमश:*

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Roar of Lion on Bank of Ganga

(From 1867-1869 A.D)

Very big army (team) of Pauraniks Kashi Naresh was there for showing to impress old Swami Vishudhanand for going very deep in discussion, and there were so many other famous Pandits like balshastri, Madhwacharya, Vamanacharya, Narayan and others. To make noise and disturbance there were students and some Gundas. In this way Pauranik army reached Madho Garden with slogan of victory. As the irregular and indisciplined army reached there, all the decided rules were broken. Scheme of Kotwal failed. Pandits surrounded Swamiji. No well wisher was allowed to sit near him. 50 thousand opponents started slogans of victoy.

Debate was started. It was named as Shastrarth (debate), but actually it was a big struggle against a mob. Each Pandit was trying his best to defeat Swamiji, but Swamiji having been ready for any question, could not be overpowered. Study and practice of so many years, many qualities, due to Brahmacharya, like fearlessness, patience, good memory etc helped him a lot. Questions were being put one after the other, Swamiji answered readily and showed his ability. His answers were making the opponents astonished and disturbed.

Pandit Taracharan asked, "How do you recognise Manusmariti belongs to Vedas?

Swamiji replied, "Brahman of Samved has clarified that whatever man has said, is a great medicine."

Tara charan was satisfied Swami Vishudhanand spoke not a shlok and asked Swamiji to prove it belongs to Ved.

Swamiji replied, "This is out of context"

Swami Vishudhanand said, "But if you know about it, tell us" Swamiji said, "It can be answered after looking at the previous part of it."

Swamiji Vishudhanand, "If you do not remember every topic, why have you come for debate in Kashi?"

Swamiji Dayanand, "Have your learnt every sutra by heart?

Swami Vishudhanand, "Yes I have learnt every Sutra"

This answer helped Swami Dayanand and he asked, "How many rules of Dharm are there?"

Swami Vishudhanand did not know the Shlokes have 10 rules of Dharm. Then swamiji speak out the Sholak that describes 10 rules. Then famous Dharmacharya Pandit Bal Shastri said, "I have studied full literature regarding Dharm. You may ask whatever you want."

"Swamiji Dayanand "Tell the rules of Adharm."

Bal Shastri was silent. He had never thought of rules of Adharm.

Period of questions and answers moved on. Pandits of Kashi placed their views about Idol worship. It was said that the word 'Pratima' has been used in Vedas. It means 'Idol'. Secondly in 'Udbudhyaswagne' Mantra 'Purta' word means 'Idol worship' Swamiji clarified both. He said, There is clear of Idol making of Ishwar. 'Purta' represent 'River' or 'Pool'. Then he repeatedly mentioned in Vedas.

To be Continue.....

आर्य सन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशक का नाम	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
प्रकाशन की अवधि	:	साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	:	प्रति बृहस्पतिवार, शुक्रवार एवं शनिवार
मुद्रक का नाम	:	धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
मुद्रक का पता	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड,नई दिल्ली- 110001
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
प्रकाशक का पता	:	पूर्ववत्
सम्पादक का नाम	:	धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
सम्पादक का पता	:	पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1% से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001

मैं धर्मपाल आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

- धर्मपाल आर्य, प्रकाशक एवं मुद्रक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

पृष्ठ 3 का शेष

नागरिकता संशोधन कानून .....

बाद देश में नई सरकार आई और गृह मंत्रालय के अनुसार ही नवंबर 2021 से लेकर इस साल फरवरी तक पाकिस्तानी हिन्दुओं को 600 एलटीवी दिए हैं।

रिपोर्ट बताती है कि आज अकेले राजस्थान में ही 25 हजार पाकिस्तानी हिन्दू हैं जो नागरिकता मिलने का इंतज़ार कर रहे हैं। इनमें से कुछ तो बीते 20 सालों से इंतजार में हैं। कई लोगों ने ऑफलाइन भी आवेदन किया है। इसके अलावा भी देखें तो सरकार को साल 2018, 2019, 2020 और 2021 में पड़ोसी देशों के 6 समुदायों से नागरिकता के लिए 8,244 आवेदन मिले।

यानि पाकिस्तान का हिन्दू न घर का है न घाट का। वहां धर्म बदलने की मजबूरी, यहां रोजी-रोटी और न जाने कब खदेड़ दिए जाने का खतरा हर समय मंडराता है और सवाल बन रहा था है कि इस देश में हिन्दुओं के लिए एक छोटे से झोपड़े के लिए जगह नहीं है बाकि सड़क के ऊपर-नीचे, बीच में चौराहों पर मजार बन सकती है लेकिन किसी हिन्दू के लिए घर नहीं। ऐसे में इस कानून का आना उन लाखों पाकिस्तानी हिन्दू-सिखों के लिए वरदान से कम नहीं है जिनकी पाकिस्तान में दिन दहाड़े बेटियां तक उठा ली जाती हैं, कम से कम अब वो एक आस के सहारे अपना धर्म और बेटियां तो बचा सकते हैं कि भारत में उन्हें शरण मिल जाएगी सवाल ये भी कि जिस देश करोड़ो बंगलादेशी मुस्लिम म्यांमार से रोहिंग्या मुसलमान अवैध रूप से घुसकर रह सकते है तो पाकिस्तान और बांग्लादेश में पीड़ित हिन्दू क्यों नही ? - ***राजीव चौधरी***

पृष्ठ 5 का शेष

आर्यसमाज शहीद भगत सिंह नगर .....

आर्यसमाज सनातन वैदिक धर्म का महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्संग है। आर्यसमाज से प्राप्त वैदिक सिद्धान्तों से हमारी लौकिक व पारलौकिक सब प्रकार की उन्नति होती है।

श्री ध्रुव मित्तल ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि परमात्मा अपने सब काम स्वाभाविक रूप से करते रहते हैं किन्तु यदि हम परमेश्वर के भरोसे आलसी बनकर समय व्यतीत करेंगे तो हमें कभी सुख प्राप्त नहीं हो सकता, क्योंकि परमेश्वर पुरुषार्थी मनुष्यों का सदा सहायक होता है। इस अवसर आचार्य उदयन की अध्यक्षता में गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों ने नाटिका के मंचन द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व व कृतित्व को प्रस्तुत किया। आर्य भजनोपदेशक पं. दिनेश पथिक ने ईश्वर भक्ति, यज्ञ महिमा, महर्षि दयानन्द गुण गौरव विषयक भजन व गीतों को प्रस्तुत किया। स्थानीय विधायक बावा हैनरी, अशोक पुरूथी रजिस्ट्रार आर्य विधा परिषद, पंजाब सभा के उप प्रधान चौ. ऋषिपाल सिह ऐडवोकेट, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा, मन्त्री श्री विनोद भारद्वाज, आचार्य सुशील शर्मा, सुशीला भगत, अरविंद घई, रश्मि घई ने ज्ञान ज्योति पर्व पर ऋषि दयानंद और आर्य समाज पर अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर आर्य सत्यदेव मोहन, चो. हरी चदं, सुरेन्द्र अरोडा, भूपेन्द्र उपाध्याय, नलिनी उपाध्याय, इन्द्र अरोड़ा, बनारसीदास, रमेश भगत, जगदीश राज, बूटी राम, सुभाष भगत सहित अनेक नगर निवासी ने भाग लिया। मंच संचालन महामंत्री हर्ष लखनपाल एवंआभारत व्यक्त प्रधान श्री रणजीत आर्या ने किया। - ***मन्त्री***

पृष्ठ 5 का शेष

महर्षि दयानन्द के स्वराष्ट्र .....

विचार रखे गए। संगोष्ठी का समापन 16 मार्च, 2024 को हुआ। समापन सत्र में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, कुलाधिपति, श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास, गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली, सारस्वत अतिथि, पदम्श्री डॉ. सुकामा, आचार्या विश्ववारा कन्या गुरुकुल रूड़की, विशिष्ट अतिथि न्यायमूर्ति सज्जन सिंह कोठारी, पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान, श्री रवि नैय्यर, कार्यकारी प्रधान, आर्यसमाज, राजापार्क, प्रो. बलवीर आचार्य, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, प्रो. ओमनाथ बिमली, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, प्राचार्या, आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज, सिरोही, राजस्थान, श्री किशनलाल गहलोत, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री जयसिंह गहलोत, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं संगोष्ठी के आयोजन सचिव डॉ. सुधीर कुमार शर्मा उपस्थित रहे। संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में प्रो. राजेश पूनिया ने राजस्थान विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में महर्षि दयानन्द सरस्वती शोध पीठ का प्रस्ताव रखते हुए अपने वेतन से हुई बचत से 5 लाख रुपये की राशि देने की घोषणा की जिसका अनुमोदन करते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति महोदया प्रो. अल्पना कटेजा ने कहा कि इस प्रस्ताव को शीघ्र ही अकादमिक परिषद् में रखा जाएगा। समापन सत्र के अध्यक्ष न्यायमूर्ति सज्जनसिंह कोठारी ने 1 लाख रुपये एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष, जयसिंह गहलोत ने 2 लाख रुपये तथा प्रधान किशनलाल गहलोत ने 1 लाख रूपये सहायता राशि देने की घोषणा की। संगोष्ठी के समापन सत्र में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने कहा कि महर्षि दयानन्द का एक-एक क्षण राष्ट्र की उन्नति में लगा। उन्होंने भारतीय विद्या के सभी विषयों का उपस्थापन किया एवं सत्यार्थप्रकाश में जीवनोपयोगी सभी विषयों का प्रतिपादन किया। पद्मश्री डॉ. सुकामा एवं प्रो. ओमनाथ बिमली ने महर्षि दयानन्द की आर्ष दृष्टि को रेखांकित किया। डॉ. सूर्या देवी ने कहा कि पढ़ने-पढ़ाने का वही अधिकारी है जिसे आत्मज्ञान है। न्यायमूर्ति सज्जन सिंह कोठारी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित स्वदेशी राज्य के महत्व को प्रकाशित किया। अंत में आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के मंत्री श्री जीववर्धन शास्त्री ने सभी का आभार प्रकट किया। संगोष्ठी में भारतवर्ष के विश्व विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा आर्य जगत् के लगभग 500 प्रतिभागियों ने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से भाग लिया। - ***मन्त्री***

पृष्ठ 5 का शेष

सिक्किम में आर्यसमाज

होना सुनिश्चित था और यह कार्य परमात्मा की कृपा से आरंभ हो गया है। संपूर्ण आर्य जगत यह कामना करता है कि शीघ्र ही वहाँ पर एक ऐसे भव्य भवन का निर्माण हो जहाँ से पूरे सिक्किम में आर्य समाज के सेवा कार्यों को गति दी जा सके। इस कार्यक्रम के दौरान आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने सिक्किम के माननीय राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी से भी शिष्टाचार भेंट की और उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती के सफल आयोजन तथा आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के अगामी कार्यक्रमों के विषय में जानकारी के साथ साथ आर्य समाज के सेवा कार्यों से भी अवगत कराया। माननीय राज्यपाल जी को आर्य समाज की ओर से स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया।- **जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री**

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के.....

उदबोधन में कहा कि 19वीं सदी में जब अविद्या का घोर अंधकार छाया था, भारत परतंत्रता की की बेडियों में जकड़ा हुआ था, सामाजिक कुरीतियों और ढोंग-पाखंड -अंधविश्वास के घिरा हुआ था, मानवता करहा रही थी, तब महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म हुआ। महर्षि ने अथक परिश्रम और तप से संसार का उपकार करने के लिए आर्य समाज जैसी आंदोलनकारी संस्था की स्थापना करके यह सुनिश्चित किया कि आर्य समाज क्रांतिकारी विचारधाराओं और समाज की कुरीतियों को दूर करने का कार्य करता रहेगा।आज आर्य समाज सुधारवादी सकारात्मक दृष्टिकोण से पारिवारिक रिश्ते, युवाओं की बढ़ती नशे की प्रवृत्ति, समाज के बढ़ते अंधविश्वास, आडंबर से उबारने के लिए हमें अंतत: महर्षि के वैदिक उद्घोष कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की आवाज को उठाना होगा तभी हम अपने जीवन को मानव कल्याण के पथ पर आगे बढ़ा सकते हैं और यही हमारा राष्ट्र धर्म भी है। हमारे समाज परिवार और देश के सामने कुछ गहरी समस्याएं उभर रही हैं जिनसे देश को कमजोर करने की कोशिशें जारी हैं हमारे अस्तित्व को हमेशा के लिए समाप्त करने की योजनाएं प्रभावित रूप से कार्य कर रही हैं हमारे युवा शक्ति को कमजोर किया जा रहा है उनके स्वास्थ्य को निशना बनाया जा रहा है उनके सोचने समझने की शक्ति को शून्य किया जा रहा है, आज परिवार छोटे हो गए हैं और अकेलापन समाज की बड़ी समस्याएं बनता जा रहा हैं।

आपने बौद्धिक आतंकवाद के विषय को बहुत ही रोचक व यथार्थवादी रूप से भविष्य में होने वाली भयानक परिस्थितियों से सभी को जागरूक किया। भारतीय सांस्कृतिक वैभव को समाप्त या कमजोर करने वाली परिस्थितियों की ओर सबका ध्यानाकर्षण किया। इस भव्य आयोजन में, महर्षि देव दयानंद के विभिन्न ग्रंथों को रोचक प्रकार से आर्यजनों को समझाने और वैदिक विचारधारा को आगे बढ़ा रहें।

श्री सुरेंद्र रैली जी कार्यकारी प्रधान ने सभी उपस्थित आर्य जनों का धन्यवाद व साधुवाद किया शांति पाठ के साथ महामंत्री द्वारा कार्यक्रम बड़े ही सौहार्द पूर्ण वातावरण में महर्षि दयानंद जी का धन्यवाद करते हुए समापन हुआ।

- ***आर्य सतीश चड्ढा, महामंत्री, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य***

पृष्ठ 5 का शेष

200वीं जयन्ती के .....

आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी और सार्वदेशिक आर्यवीरदल के प्रधान आचार्य स्वामी देवव्रत जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, अमेरिका से पधारे डॉ. रमेश गुप्ता जी, ओमप्रकाश आर्य, किशन लाल गहलोत, जीववर्धन शास्त्री, एडवोकेट अभय देव शर्मा, एडवोकेट चंद्र मोहन कुशवाहा के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, श्योराज वशिष्ठ, विमलेश आर्या आदि साक्षी रहे।

- ***मन्त्री***

शोक समाचार

डॉ. जगराम यादव जी का निधन

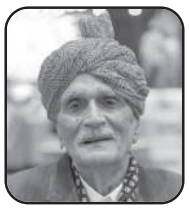

आर्यसमाज शाहबाद मुहम्मदपुर, नई दिल्ली के पूर्व प्रधान डॉ. जगराम यादव जी का दिनांक 10 मार्च, 2024 को 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे आर्यसमाज के सच्चे सिपाही के रूप में अन्तिम समय तक कार्य करते रहे। उनका अन्तिम संस्कार स्थानीय शमशान घाट पर किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 18 मार्च, 2024 से रविवार 24 मार्च, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 21-22-23/03/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 मार्च, 2024

ओ३म्

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर आर्य प्रतिनिधि सभा, अमरीका द्वारा आयोजित भव्यातिभव्य

अमरीका चलो

अमरीका चलो

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

न्यूयार्क, दिनांक 18-19-20-21 जुलाई 2024

सम्माननीय भाईयों और बहिनो!

भारत के सैकड़ों आर्यजन इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने पहुँच रहे हैं। आप भी अपना रजिस्ट्रेशन शीघ्र ही करायें। इस अवसर पर जो यात्री अमरीका घूमना फिरना चाहते हैं उनके लिये दो प्रकार की यात्राओं का आयोजन किया गया है। ध्यान रहे कि अन्य देशों की अपेक्षा अमरीका की यात्रा महंगी रहती है क्योंकि केवल एअर टिकिट का मूल्य ही लगभग एक लाख पच्चीस हजार चल रहा है।

प्रथम टूर - 5 रात्रि 6 दिन, व्यय-राशि 2,35,000/- रुपये

17 जुलाई से 23 जुलाई (दिल्ली-अमरीका-दिल्ली)

3 रात्रि आर्य महासम्मेलन, 2 रात्रि न्यूयार्क

इस राशि में निम्नलिखित खर्च शामिल हैं

हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकिट (अनुमानित मूल्य 1,25,000/-) सभी स्थानों पर आने जाने की वाहन व्यवस्था, इन्श्योरेन्स (60 की उम्र तक), नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि) GST 5%, TCS 5%

द्वितीय टूर - 7 रात्रि 8 दिन, व्यय-राशि 2,75,000/- रुपये

15 जुलाई से 23 जुलाई (दिल्ली-अमरीका-दिल्ली)

2 रात्रि नियाग्रा, 3 रात्रि आर्य महासम्मेलन, 2 रात्रि न्यूयार्क

इस राशि में निम्न लिखित खर्च शामिल हैं

हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकिट (अनुमानित मूल्य 1,25,000/-) सभी स्थानों पर आने जाने की वाहन व्यवस्था, इन्श्योरेन्स (60 की उम्र तक), नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि) GST 5%, TCS 5%

उक्त यात्रा में जाने वाले सभी इच्छुक यात्रीगण शीघ्र ही 50,000/- (पचास हजार) का बैंक ड्राफ्ट Thomas Cook (India) Ltd. के नाम का बनवाकर निम्नलिखित पते पर भेजें।

न्यूयार्क आर्य महासम्मेलन समिति, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

टूर रजिस्ट्रेशन के लिये तथा यू.एस. वीजा के लिये कृपया
श्री संदीप आर्य से मो.नं. 9650183339 पर सम्पर्क करें

कृपया नोट करें: जो यात्री वीजा मिलने के बाद भी यदि टूर में नहीं जायेंगे उनकी 50,000/- की एडवांस राशि वापस नहीं होगी। एडवांस राशि केवल उन्हीं की वापस होगी जिन्हें यू.एस. वीजा नहीं मिलेगा।

प्रतिष्ठा में,

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj .org

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर शुभकामनाओं के बैनर अपने घर, आर्य समाज और क्षेत्र में अच्छे स्थानों पर लगवायें

साइज 3 x 2 फुट

मूल्य ₹250 में 25 बैनर

वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली
www.vedicprakashan.com / +91-9540040339

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह